मार्टिन लूथर किंग
(सचित्र जीवनी)

मार्टिन लूथर किंग

(सचित्र जीवनी)

मार्टिन के परिवार में पाँच सदस्य थे. रेवरेंड और मिसेज़ किंग उनके पिता और माता थे. क्रिस्टीन उनकी बड़ी बहन थी और अल्फ्रेड उनका छोटा भाई था.

मार्टिन मंछले भाई थे.

किंग परिवार जॉर्जिया के अटलांटा नगर में एक बड़े घर में रहता था.

वह एक सुखी परिवार था.

मार्टिन के पिता एक पादरी थे. इसलिए लोग उन्हें रेवरेंड किंग बुलाते था.

रविवार के दिन जब किंग परिवार चर्च जाता था, तब उनके पिता लोगों को उपदेश देते थे. चर्च में अपने पिता को सुनना मार्टिन को अच्छा लगता था.

उनके पिता जो बड़े-बड़े शब्द बोलते थे वह शब्द उन्हें बहुत प्रिय थे. वह कहा करते थे, "मैं भी ऐसे शब्दों का उपयोग करना सीखूंगा."
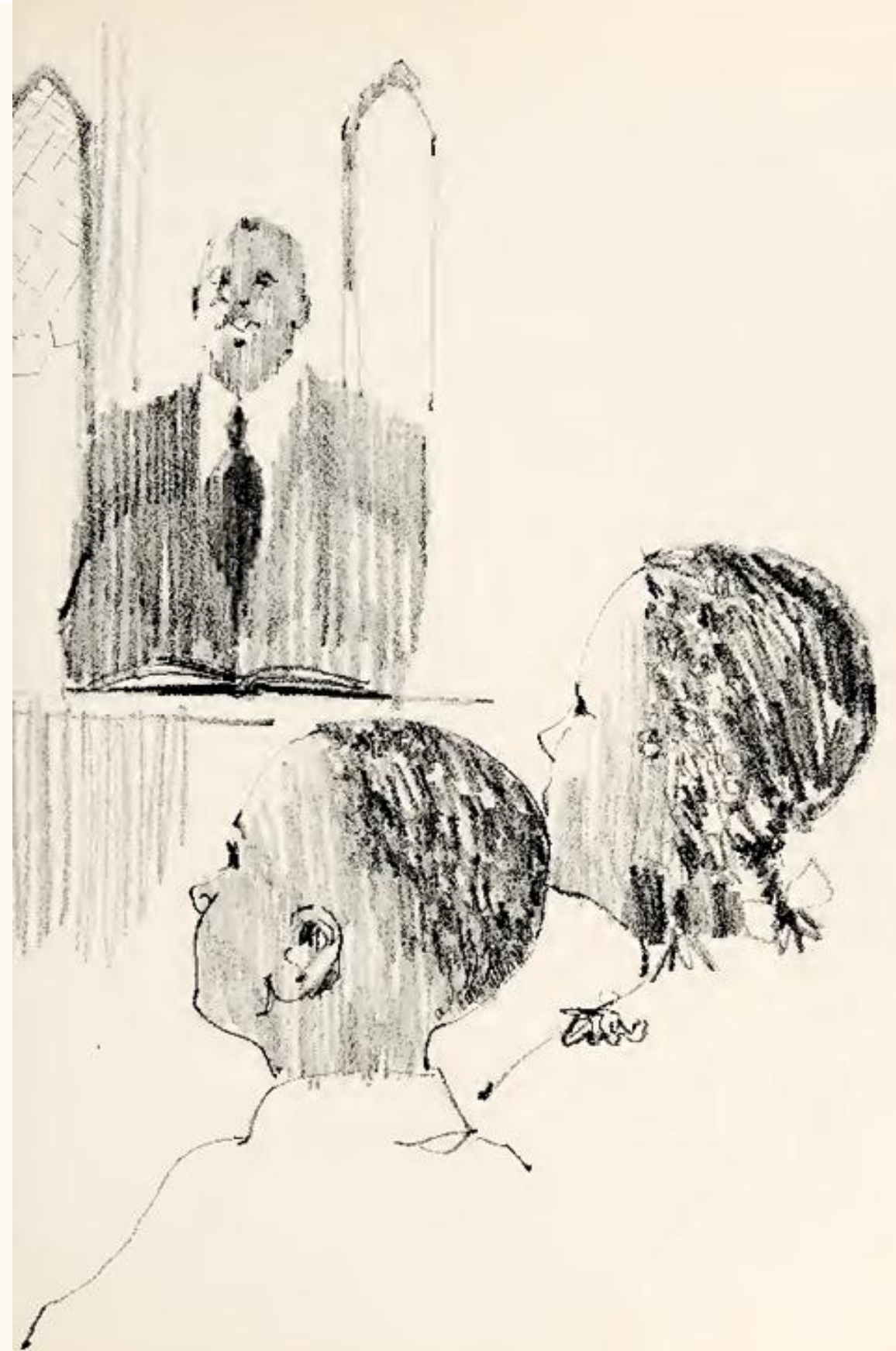
मार्टिन लम्बे लड़के न थे. लेकिन वह शक्तिशाली थे. जिस प्रकार के खेल लड़के हर जगह खेलते हैं वह सब खेल खेलना उन्हें पसंद था.

फुटबाल खेलते समय वह बहुत तेज़ दौड़ते थे.

बेसबाल में वह सबसे अच्छे बल्लेबाज़ थे. वह सदा जीतने के लिए खेलते थे.

किंग परिवार के बच्चों को बास्केटबॉल खेलना भी पसंद था. उनके पिता ने घर के पिछले अहाते में एक बास्केटबॉल कोर्ट बनाने में बच्चों की सहायता की थी.
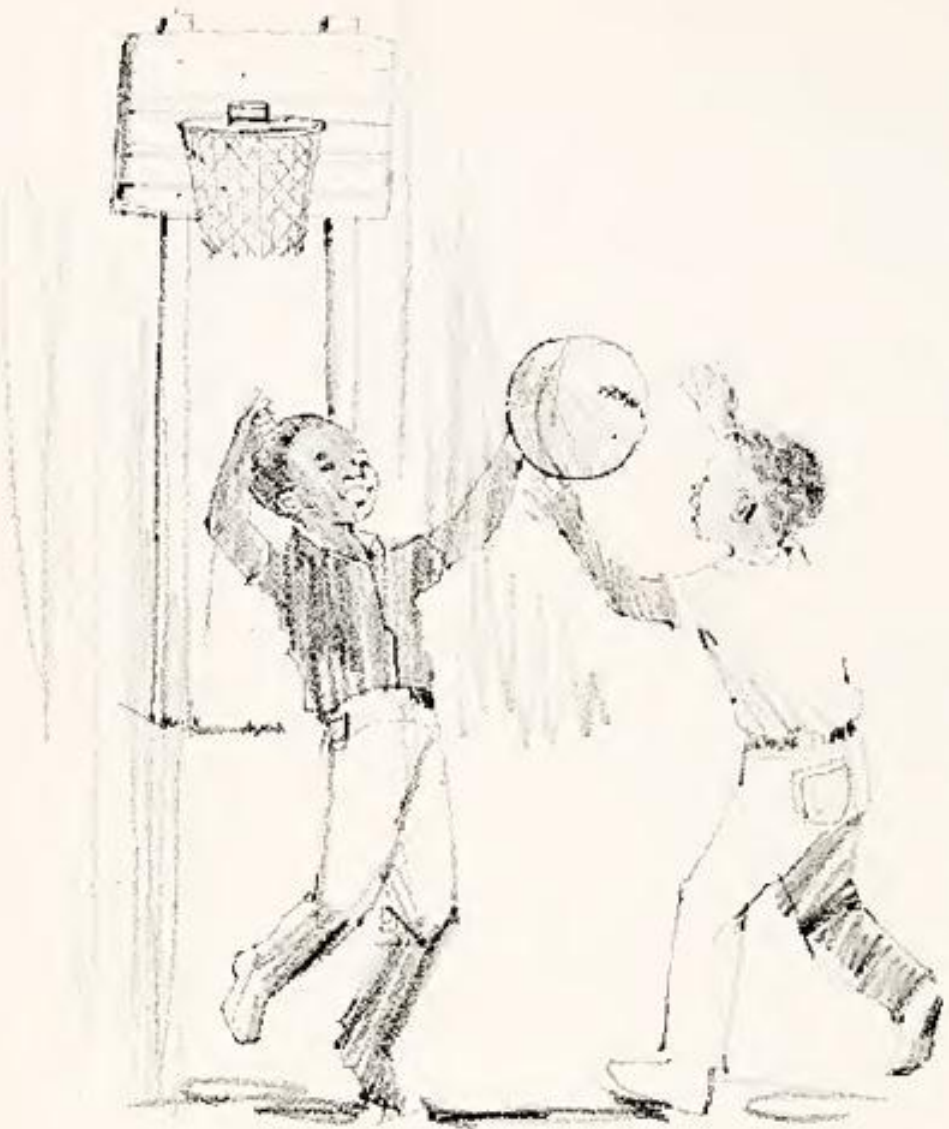
मार्टिन को लड़ना अच्छा न लगता था. वह कभी भी किसी से झगड़ा शुरू न करते थे. लेकिन अगर वह किसी लड़के को किसी लड़की को छेड़ते या किसी छोटे बच्चे को तंग करते देखते तो वह उस लड़के को रोक देते थे. लेकिन वह किसी के साथ लंबे समय तक क्रोधित न रहते थे. वह उस लड़के से फिर से सुलह कर लेते थे और दोनों मित्र बन जाते थे.

जब मार्टिन, क्रिस्टीन और अल्फ्रेड छोटे थे तब वह पड़ोस के सब बच्चों के साथ खेलते थे, चाहे वह अश्वेत हों या श्वेत. लेकिन जब वह स्कूल जाने लगे तब श्वेत बच्चों ने खेलने के लिए उनके घर आना बंद कर दिया.

मार्टिन ने देखा कि श्वेत लड़कियाँ और लड़के उस स्कूल में न जाते थे जहाँ वह और क्रिस्टीन और अल्फ्रेड पढ़ने के लिए जाते थे.

जैसे-जैसे वह बड़े हुए उन्हें समझ आने लगा कि ऐसी कुछ जगहें थीं जहाँ वह और उनका परिवार नहीं जा सकते थे.
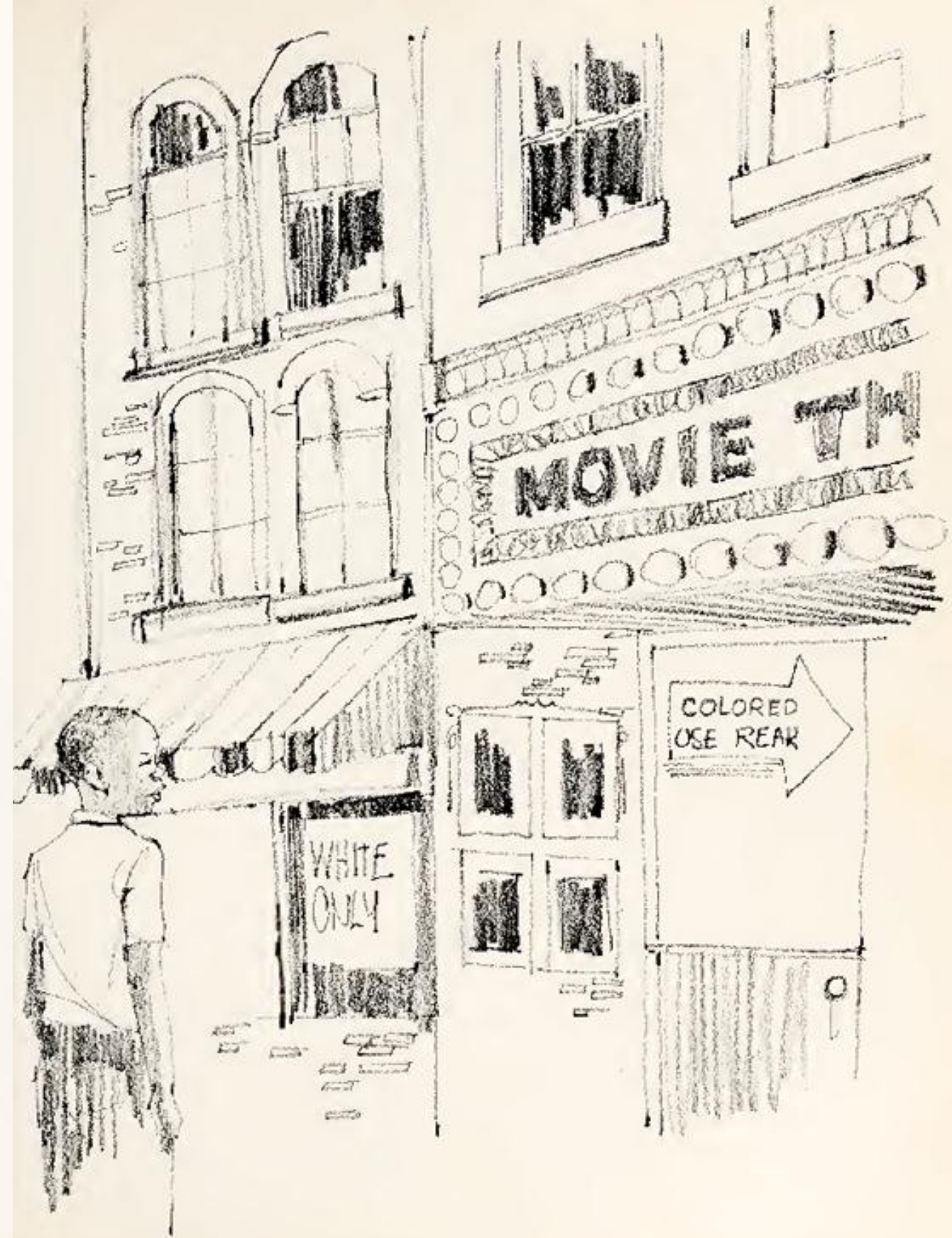
इन बातों से उन्हें बहुत दुःख हुआ था. वह सोचने लगे कि इस भेदभाव को लेकर वह क्या कर सकते थे.

वह इस बात पर विचार करने लगे कि बड़े हो कर वह क्या बनेंगे.

क्या वह एक डॉक्टर बनेंगे और रोगियों की सेवा करेंगे?

क्या वह एक वकील बनेंगे और न्यायालय में लोगों की सहायता करेंगे?

इस बीच वह स्कूल में बड़ी मेहनत से पढ़ाई करते रहे. जितना अध्यापक उनसे कहते वह उससे अधिक पढ़ाई करते थे.

उन्हें पुस्तकें बहुत प्रिय थीं. वह हर समय पढ़ते रहते थे. अकसर जेब-खर्च के लिए मिले सारे पैसे वह पुस्तकों पर खर्च कर देते थे क्योंकि पुस्तकें खरीद कर अपने पास रखना उन्हें अच्छा लगता था.

जैसे-जैसे मार्टिन बड़े हुए उन्होंने और अधिक पुस्तकें पढ़ीं. वह अलग-अलग विषयों पर पुस्तकें पढ़ते थे.

स्कूल की पढ़ाई में वह इतने अच्छे थे कि मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु में उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा पूरी कर ली. पन्द्रह वर्ष की आयु में ही वह कॉलेज जाने लगे.

क्या तुम जानते हो कि अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मार्टिन क्या बने?

वह डॉक्टर नहीं बने.

वह वकील नहीं बने.

अपने पिता समान वह एक पादरी बने.

उन्होंने बड़े-बड़े शब्द भी सीख लिए.

उनके उपदेश इतने सुंदर होते थे कि लोग उनको सुन कर बहुत प्रभावित हो जाते थे. उनके वचनों से लोग इतने प्रेरित हो जाते थे कि वह उसी पल उन उपदेशों का अनुकरण करने लगते थे.

अब मार्टिन को भी लोग रेवरेंड किंग बुलाते थे.

जिस नगर में मार्टिन लूथर किंग रहते थे वहाँ पर अश्वेत लोग बस के अगले भाग में बैठ नहीं सकते थे. उन्हें बस के पिछले भाग में बैठना पड़ता था. अगर बस में भीड़ होती तो अश्वेत लोगों को अपनी सीट श्वेत लोगों के लिए खाली करनी पड़ती थी.

मार्टिन ने कहा, “यह कानून अच्छा कानून नहीं है. हम इसे बदलने का प्रयास करेंगे.”

“कैसे?” लोगों ने पूछा.

‘जब तक यह कानून बदलता नहीं है तब तक हम लोग बसों में नहीं बैठेंगे,” उन्होंने कहा.

“क्या पैदल चलेंगे?”

“हाँ. या फिर अपने मित्रों के साथ उनकी कारों में जायेंगे, टैक्सी में जायेंगे. चाहे कुछ भी हो, हम किसी से झगड़ा नहीं करेंगे. सदा शांत रहेंगे. अपना ध्येय पाने के लिए लड़ाई से बेहतर विकल्प भी हैं.”

रेवरेंड किंग बहुत ही मनमोहक भाषा में लोगों से बात करते थे, उन्होंने अश्वेत लोगों को समझाया कि हमें दूसरों से घृणा करने के बजाय उनसे प्रेम करना होगा. लोगों ने वैसा ही आचरण किया जैसा उन्होंने कहा था. एक वर्ष से भी अधिक समय तक बसें लगभग खाली चलती रहीं. बस कंपनी को भारी हानि हुई.

अंतत कानून बदल दिया गया. सब लोग बसों में यात्रा कर सकते थे और जहाँ मन करे वहाँ बैठ सकते थे.

मार्टिन लूथर किंग ने सारे अमरीका और समस्त संसार में कई यात्राएँ कीं. जो लोग बुरे क़ानूनों के बदलवाने के लिए संघर्ष कर रहे थे उनकी उन्होंने कई बार सहायता की.

उन्होंने लोगों को समझाया कि उन्हें बिना लड़े सच्चाई और न्याय के लिए संघर्ष करना चाहिए. वह उन्हें सदा स्मरण कराते थे:

“सत्यवादी बनो. एक-दूसरे से प्रेम करो. बहुत परिश्रम करो ताकि तुम्हें अपने आप पर गर्व हो और तुम आत्मसम्मान के साथ अपना सिर ऊंच रख सको.”

वह इतने लोकप्रिय हो गये कि समाचार पत्रों में हर दिन उनके विषय में समाचार छपते थे. अकसर उन्हें रेडियो पर सुना और टीवी पर देखा जा सकता था.

विश्व में शान्ति का प्रचार करने और लोगों में प्रेम की भावना बढ़ाने के लिए मार्टिन लूथर किंग को 1964 में एक महान पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

इस पुरस्कार को नोबेल पुरस्कार कहा जाता है. नोबेल पुरस्कार जीतने वाले व्यक्ति को एक सुंदर मैडल और बहुत सारी धनराशि दी जाती है.

तुम्हें क्या लगता है कि रेवरेंड किंग ने पुरस्कार में पाए 54,600 डॉलर किस प्रकार उपयोग किये?

उन्होंने अपने लिए या अपने परिवार के लिए इस धन का उपयोग नहीं किया. इसे उन्होंने लोगों की सहायता की लिए खर्च किया.

फिर 1968 में एक दिन एक बड़ी दुखद घटना घटी. एक व्यक्ति ने, जिसके मन में दूसरों के लिए कोई प्रेम न था, मार्टिन लूथर किंग की हत्या कर दी.

उनके निधन पर यूनाइटेड स्टेट्स और सारे विश्व में लोग बहुत आहत और दुःखी हो गये. उनके अंतिम संस्कार में हज़ारों लोगों ने भाग लिया. उस दिन स्कूल और कार्यालय बंद कर दिए गये.

यद्यपि मार्टिन लूथर किंग इस संसार में नहीं हैं पर उनके उपदेश और उनके कार्य लोगों को अब भी प्रेरित करते हैं. उनसे प्रेरणा लेकर लोग उनकी तरह जी सकते है, उनकी तरह प्यार कर सकते हैं, उनकी तरह कार्य कर सकते हैं. इस तरह उन्हें हम कभी भुला न पायेंगे.

समाप्त